BRDU International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2455-278X
(A peer reviewed and refereed Journal)
Vol.2, Issue.I, January 2017, Pc : BRDU-1701002
Impact Factor : 5.725

भारत की सुरक्षा और कूटनीति में चीन एक चुनौती

Dr. Ashwini Kumar, Assistant Professor
Department of Political Science, NIILM University, Kaithal
Sonia, Research Scholar
Department of Political Science, NIILM University, Kaithal

सारांश (Abstract):-

भारत की विदेश नीति में चीन के साथ हमारे संबंधों का एक अति महत्वपूर्ण स्थान है। भारत की सुरक्षा और कूटनीति की समस्या चीन के संदर्भ में नई और पुरानी दोनों तरह की समस्याएं हैं। प्राचीन काल से ऐतिहासिक विवाद, क्षेत्रीय विवाद, कुछ समय बाद आर्थिक विवाद, सेना तथा राजनैतिक प्रतिस्पर्द्धा आदि विवाद मुख्य है। तिब्बत की समस्या भारत की सुरक्षा में सबसे बड़ी बाधा है। यही समस्या भारत की कूटनीति की नीति को भी प्रभावित करती है। भारत और चीन के संबंधों को सुधारने में पंचशील समझौता एक मील का पत्थर साबित हुआ अंतर्राश्ट्रीय राजनीति के प्रति दोनों के दृश्टिकोण में समानता थी। यद्यपि उस समय भी सीमा के संबंध में तिब्बत संबंधी समझौते को लागू करने के विशय पर कुछ कठिनाईयां अवश्य थी। तथापि अच्छे संबंधों की इच्छा के कारण उन कठिनाइयों को कम किया गया, उभरने नहीं दिया गया।

मुख्य भाब्द :– सुरक्षा, कूटनीति, समस्या, चुनौतियां, यात्रा, मित्रतापूर्ण संबंध

प्रस्तावना (Introducrtion):-

भारत की विदेश नीति में चीन के साथ हमारे संबंधों का एक महत्वपूर्ण स्थान है। जिस समय भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई उस समय चीन में भयंकर गृह युद्ध चल रहा था। साम्यवादी उस युद्ध में विजय की ओर अग्रसर थे। इधर भारत की अपनी अनेक समस्याएं थी जो देश के विभाजन से उत्पन्न हुई थी। अतः आरम्भ में भारत–चीन संबंध केवल औपचारिक थे। केवल अन्तर्राश्ट्रीय मंचों पर भारत–चीन संबंध दृश्टिगोचर होते थे अन्यथा दोनों में कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं थे। परन्तु चीन की क्राति के प चात् दोनों देशों के बीच भीघ्रता से घनिश्ठ मित्रता को पुनः जागृत किया गया। एशिया में साम्राज्यवाद के आगमन के साथ पारम्परिक मैत्री को धक्का लगा था। जनसंख्या, मानव और प्राकृतिक संसाधनों की दृश्टि से भारत और चीन को एशिया में जो स्थान प्राप्त है वह अन्य किसी देश को नहीं है। वी.पी. दत्त का कथन है कि इन दोनों देशों के संबंधों की पृश्ठभूमि में एक गौरवशाली इतिहास है। दो हजार वर्श से भी अधिक पूर्व भारत–चीन सांस्कृतिक संबंध विकसित हुए थे। भारत ने संयुक्त राश्ट्र में जनयवादी चीन के प्रतिनिधित्व का पूरा समर्थन किया। नई दिल्ली और पीकिंग के मध्य सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने के प्रयास किए गए। प्रधानमंत्री नेहरू ने एक पत्र में भारतीय राजदूत पणिक्कर को कहा था कि जब–जब चीन में भाक्तिशाली सरकार की स्थापना हुई तब–तब उसने अपनी सीमाओं के विस्तार के प्रयास किए हैं। इस पर विचार करना अति आव यक है कि क्या भारत और चीन के सुरक्षा संबंधी मुदों में ऐसे अंतर्निहित विचार व्यक्त किए गए हैं, जो दक्षिण पूर्व एशिया दोनों क्षेत्रों के देशों के बीच चीन के बारे में विद्यमान हैं। क्या इस क्षेत्र में भारत के बारे में चिंताएं मौजूद हैं

वर्तमान समय में चीन घरेलू राजनीतिक पक्षों और आर्थिक विकास पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहता है। इस प्रकार अब चीन में आंतरिक पक्षों पर ही बल दिया जा रहा है। चीन का यह आंकलन है कि अपने चारों ओर स्थिरता तथा भाांति का माहौल बनाए रखना अति आव यक है ताकि आंतरिक स्थिरता और विकास संबंधों प्रमुख उद्दे य प्राप्त किए जा सकें। चीन भारत की सुरक्षा के लिए एक चुनौती बनता जा रहा हे।

चीन यह मानता है कि 21वीं सदी में चीन एशिया की महाशक्ति होगा। इसी आकांक्षा के कारण चीन दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में चीन के प्रभुत्व पर विचार करता है। चीन यह मानता है कि सर्वोच्च स्थान प्राप्त करके वि व की बड़ी ताकत के रूप में उभरता चीन की नियति है। इसलिए अन्य प्रौद्योगिकीय उन्नत देशों से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का कारगर ढंग से वामना करने के लिए चीन अपनी प्रौद्योगिकीय और रक्षा संबंधी क्षमताएं बहाता रहेगा। भारत के हितों, अर्थात् एशिया के इस उपमहाद्वीप के संबंध में चीन पाकिस्तान के साथ अपने संबंध बनाए रखेगा तथा नेपाल, बंगलादेश और कुछ सीमा तक भूटान के प्रति सकारात्मक दृश्टिकोण अपनाएगा। भारत के साथ चीन के संबंध जटिल हैं। सीमा–विवाद सुलझाने के बावजूद भारतीयों और चीनियों के दिमाग से सन् 1962 की स्मृतियां पूरी होने में काफी समय लगेगा। सन् 1979 में भारत के तात्कालीन विदेश मंत्री अटल वाजपेयी ने चीन की यात्रा कर चीन से संवाद स्थापित किया। परन्तु भारत और चीन के संबंधों में कोई विशेश सुधार नहीं हुआ क्योंकि, भारत चीन द्वारा भारत की भूमि छोड़ने की बात पर दृढ़ बना रहा। सन् 1981 के बाद चीन ने

भारत के साथ संवाद कायम करने की नीति को आगे बढ़ाया है। सितम्बर 1993, दिसम्बर 1996, जून 2003 के भारत–चीन समझौते महत्वपूर्ण हैं।

चीन के राश्टवादी हू–जिन्ताओं की नवंबर में की गई भारत की चार दिवसीयय यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच की संवाद प्रक्रिया और आगे बढ़ी है। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने अनेक समझौते किए जिनमें दोनों देशों के लोगों का आपसी सम्पर्क, पर्यटन, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, विद्यार्थियों की आपसी समझौते प्रमुख हैं। वर्तमान में भारत–चीन संबंधों के सुधार में आर्थिक व्यापारिक संबंधों के सुधार की मुख्य भूमिका रही है। जुलाई 2006 में नाथूला दर्रे को भी व्यापार के लिए खोल दिया गया इस सीमा मार्ग के खुलने से सीमा विवाद को हल करने में मद्द मिल सकती है। इसके साथ ही प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की जनवरी 2008 को दो दिवसीय यात्रा के दौरान भारत और चीन दोनों देशों ने रेल, भूविज्ञान, भूमि संसाधन प्रबन्धन और अन्य क्षेत्रों में सहयोग के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए। डॉ0 मनमोहन सिंह और चीन के प्रधानमंत्री बेन जियाबाओ की मुलाकात के बाद 21वीं सदी के संयुक्त दृश्टिकोण को रेखांकित करते हुए साझा दस्तावेज में कहा गया है कि दोनों देश अन्तर्राश्ट्रीय वचनबद्धताओं के अनुरूप असैनिक परमाणु ऊर्जा सहयोग को प्रतिबद्ध है। भारत और चीन वि व के दो बड़े विकासशील देश हैं चीन और उसके सबसे बड़े पड़ोसी देश भारत के बीच लम्बी सीमा रेखा है। लम्बे अरसे से चीन सरकार भारत के साथ अपने संबंधों का विकास करने को बड़ा महत्व देती रही है। वर्श 1949 में नये चीन की स्थापना के बाद के अगले वर्श, भारत ने चीन के साथ राजनयिक संबंध सथापित किये। इस तरह भारत चीन लोक गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर समाजवादी देश बना। 1950 के दशक में चीन–भारत के संबंध इहिास के सबसे अच्छे काल में थे। दोनों देशों के भीर्श नेताओं ने एक–दूसरे देशों की अनेक यात्राएं की और उनकी जनता के मध्य अवागमन उच्च स्तर पर था। लेकिन, 1960 के दशक में चीन–भारत संबंध भीत काल में प्रवेश कर गये। यह भीतकाल एक ऐतिहासिक लम्बी नदी में एक छोटी लहर के समान था। 80 के दशक के मध्य तक वे भीत काल से उभर कर फिर एक बार घनिश्ठ हुए। चीन–भारत संबंधो में भौथिल्य आया, तो दोनों देशों की सरकारों के उभय प्रयासों से दोनों के बीच फिर एण्क बार राजूदत स्तर के राजनयकि संबंधों की बहाली हुई। 1980 के दशक से 1990 के दशक के मध्य तक चीन व भारत संबंध एक अच्छे स्तर पर थे, हालांकि वर्श 1998 में दोनों देशों के माध्य पांच परमाणु परीक्षणों के कारण उतार आया। परन्तु दोनों राश्ट्रों के प्रयासों द्वारा वर्श 1999 में भारतीय विदेश मंत्री की चीन यात्रा के बार समाप्त हो गया।

हाल ही के वर्शों में चीन–भारत संबंधों में निरन्तर सुधार हुआ है। चीन व भारत के वरिश्ठ अधिकारियों के मध्य सम्पर्क बढ़ा है। 2001 में पूर्व चीनी नेता ली फंग ने भारत की यात्रा की। वर्श 2002 में पूर्व चीनी प्रधानमंत्री जू रोंग जी ने भारत की यात्रा की। इसके प चात् वर्श 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेई ने चीन की यात्रा की। उन्होंने चीनी प्रधानमंत्री वन चा पाओं के साथ चीन–भारत संबंधों के सिद्धांत और चतुर्मुखी सहयोग के घोशणापत्र पर हस्ताक्षर किये। इस घोशणापत्र ने जाहिर किया कि चीन व भारत के द्विपक्षीय संबंध अपेक्षाकृत परिपक्व काल में प्रवेश कर चुके हैं। इस घोशणापत्र में अनेक महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समस्याओं व क्षेत्रीय समस्याओं पर दोनों के समान रूख भी स्पश्ट किये।

पंचशील चीन व भारत द्वारा भारत की भाांति व सुरक्षा में किया गया एक महत्वपुर्ण योगदान है। देशों के संबंधों को लेकर स्थापित इन सिद्धांतों की मुख्य विशयवस्तु है – एक दूसरे की प्रभुसत्ता व प्रादेशिक अखंण्डता का सम्मान किया जाये, एक–दूसरे पर आक्रमण न किया जाये, एक–दूसरे के अंदरूनी मामलों में दखल न दिया जाये एवं समानता एवं समानता एवं आपसी लाभ के आधार पर भाांतिपूर्ण सहअस्तित्व बनाए रखा जाये। ये सिद्धांत वि व के अनेक देशों द्वारा स्वीकार कर लिये गये हैं और द्विपक्षीय संबंधों पर हुए अंतरराश्ट्रीय सम्मेलनों व दस्तावेजों में दर्ज किये गये हैं।

भारत व चीन के संबंधों में कुछ अनसुलझी समस्याएं रही हैं। चीन व भारत के बीच सब से बड़ी समस्याएं सीमा विवाद और तिब्बत की हैं। चीन सरकार हमेशा से तिब्बत की समस्या को बड़ा महत्व देती आई है। वर्श 2003 में भारतीय प्रधानमंत्री वाजपेयी ने चीन की यात्रा की और चीनी प्रधानमंत्री वेन जियाबाओं के साथ एक संयुक्त घोशणापवत्र जारी किया। घोशणापत्र में भारत ने औपचारिक रूप से कहा कि भारत तिब्बत को चीन का एक भाग मानता है। इस भारत पर अपने रूख पर प्रकाश डाला, जिसे चीन सरकारी की प्रशंसा प्रात्त हुई।

इसके अतिरिक्त, चीन व भारत के मध्य सीमा समस्या भी लम्बे अरसे से अनसुलझी रही है। हाल के वर्शों में चीन द्वारा भारत के लद्दाख क्षेत्र में चीनी सेना द्वारा चूमार क्षेत्र में भारतीय सीमा चौकियों को तोड़ना एवं भारतीय सीमाओं में घुसपैठ की कार्यवाही ने दोनों देशों के संबंधों का स्तर खराब कर दिया।

भारत–चीन के बढ़ते व्यापार को एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि भारत और चीन जहां कई क्षेत्रों में कड़े प्रतियोगी हैं,? वहीं कई क्षेत्रों में उनके वह एक दूसरे के पूरक भी हैं और कई और क्षेत्रों में उनकी ताकत अलग–अलग भी है।

21वीं भाताब्दी के चीन व भारत प्रतिद्वंदी हैं और मित्र भी। अंतरराश्ट्रीय मामलों में दोनों में व्यापक सहमति है। आंकड़े बताते हैं कि संयुक्त राश्ट्र संघ में विभिन्न सवालों पर हुए मतदान में अधिकांश समय, भारत और चीन का पक्ष समान रहा। चीन भारत संबंधों के भविश्य के प्रति बड़े आ वस्त हैं। समय गुज़रने के साथ दोनों देशों के बीच मौजूद विभिन्न अनसुलझी समस्याओं व संदेहों को मिटाया जा सकेगा और चीन व भारत के राजनीतिक संबंध और घनिश्ठ होंगे। यह दोनों देशों की सरकारों की समान अभिलाशा भी है। दोनों पक्ष आपसी संबंधों को और गहन रूप से विकसित करने को तैयार हैं।

4. उद्दे य (Objectives of Research):- मेरे भोध के मुख्य लक्ष्य इस प्रकार हैं :–

1. सीमा विवाद का अध्ययन

2. 2. (क) तिब्बत की समस्या (ख) हिमालय का विवाद (ग) लद्दाख क्षेत्र की समस्या (घ) पंचशील समझौता (ड.) सैनिक क्षेत्र की चुनौतियों का अध्ययन

5. भाोध प्रविधि (Research Methodology):-

प्रस्तुत भाोध को क्रियान्वित करने के लिए ऐतिहासिक विवेचनात्मक एवं वि लेशणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक आकंड़ों के साथ–साथ द्वितीयक पत्र–पत्रिकाएं विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रकाशित लेखों के अलावा सरकारी दस्तावेजों को अध्ययन में भाामिल किया जायेगा। 1962 के युद्ध के बाद भारत और चीन के संबंधों पर 2015 तक क्या प्रभाव पड़ा इसका अध्ययन करना और भारत की सुरक्षा और कूटनीति के लिए चीन किसी प्रकार एक चुनौती है इसका भी अध्ययन किया जायेगा।

सीमा विवादः–

सीमा विवाद का आरंभ 1956–57 में चीन द्वारा अक्साई चीन क्षेत्र में एक सड़क निर्माण से आरम्भ हुआ था। चीन ने समय–समय पर भारतीय क्षेत्रों पर अपने दावे प्रस्तुत किए हैं। अक्टूबर 1954 में चीनी सेनाओं ने भारत के नौजवानों की सीमा के इस और आकर नौ लोगों की हत्या कर दी और दस को बन्दी बना लिया। इससे स्पश्ट हो गया कि चीन भारत से युद्ध करना चाहता है क्योंकि यह घटना भारतीय सीमा के अन्दर हुई थी संबंध तब ज्यादा बिगड़ गए जब भारत और चीन के प्रधानमंत्रियों ने अप्रैल 1960 में प्रत्यक्ष बातचीत करके विवाद समाप्त करने का असफल प्रयास किया। न तो मतभेद दूर हुए और न ही वे कम हुए। 1962 में चीन 25000 वर्ग मील भारतीय प्रदेश पर अवैध अधिकार कर लिया और चीन चीन ने भारत पर आक्रमण करने का नि चय कर लिया। भारत और चीन के बीच सीमा की समस्या विवाद का एक प्रमुख कारण बनी हुई है। और यही युद्ध का भी करण बनी। फलस्वरूप अक्टूबर 1962 को नेपाल और लद्दाख दोनों क्षेत्रों में भीशण आक्रमण कर दिया। रक्षा कृश्णा मेनन के अनुसार प्रहार इतना भ्यानक था मानो भारत की सीमा पर टिड्डियों ने अपनी क्रूरता का प्रदर्शन किया हो। 16 नवम्बर तक बोमदीला को पर करके चीनी सेना भारत तक पहुंच गई। बहुत ज्यादा संख्या में भारतीय सेना के अधिकारी और जवान हताहत हुए परन्तु यह माना गया कि चीन में क्षति हमसे ज्यादा हुई। 21 नवम्बर 1962 को एकपक्षीय युद्ध विराम की घोशणा के बाद चीन ने तीन–सूत्री प्रस्ताव दोहराया लेकिन भारत ने अस्वीकार कर दिया। क्योंकि भारत की मर्यादा को हानि पहुंची थी, उसका निरादर हुआ थी जबकि चीन उने भारत की हाजारों वर्ग मील भूमि पर अधिकार कर लिया था। ब्रिटेन और अमेरिका के आ वासन ने चीन को युद्ध विराम के लिए विवश कर दिया और उसने अपनी इच्छा से अपनी सेना निर्धारित सीमा से पीछे हटा ली। 20वीं भाताब्दी के अंत में चीन एक महाशक्ति के रूप में उभरने के लिए अग्रसर था। चीन का राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध सुनि चत करना भारत की विदेशनीति का एक प्रमुख ध्येय होना चाहिए। भारत और चीन एक दूसरे के पूरक न होकर प्रतिद्विन्दी हैं, ऐसा न केवल वाणिज्य के क्षेत्र में है, वरन् वि व राजनीति में भी। चीन को चाहे कुछ भी कहे लेकिन यह सत्य है कि चीन एक भाक्तिशाली परमाणु अस्त्र सम्पन्न पड़ोसी देश है। यदि भारत को अपनी सुरक्षा और कूटनीति को सफल बचाना है तो चीन के साथ मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करना होगा वरना यह एक चुनौती बन जायेगा।

तिब्बत की समस्या :–

तिब्बत भारत के उत्तर में स्थित है। भारत के अतिरिक्त उसकी दक्षिण्रा सीमा पर नेपाल और बर्मा तथा उत्तरी सीमा पर चीन का सिकियांग प्रान्त सिथत है। तिब्बत का कुल क्षेत्रफल 47000 वर्गमील है। यह लिमालय पर्वत माला पर इतनी ऊंचाई पर स्थित है कि इसे संसार की छत कह दिया जाता है। इसकी राजनीतिक व्यसस्था बौद्ध परंपरा पर आधारित थी। तिब्बत के धार्मिक नेता वहां के राज्याध्यक्ष हूआ करते थे। चीन ने कुछ समय बाद तिब्बत की राजधानी ल्हासा पर अपना नियंत्रण स्थापित करके स्वेच्छा से सातवें दलाई लामा का चयन किया। 1890 में भारत की ब्रिटिश सरकार ने चीन के साथ एक संधि पर हस्ताक्षर किए जिससे भारत तिब्बत सीमा रेखा निर्धारित की गई इस संधि को तिब्बत के भाासकों ने अस्वीकार कर दिया। इस पर भारत ब्रिटिश सरकार और चीन के मध्य अनेक समझौते हुए लेकिन अंत में ब्रिटेन और रूस दोनों ने चीन की तिब्बत पर प्रभुता को स्वीकार कर लिया। इन दोनों देशों ने यह भी स्वीकार किया कि यह चीन के माध्यम से तिब्बत के साथ संबंध रखेंगे। कुछ समय तक ऐसा ही चलता रहा। लेकिन द्वितीय वि व युद्ध के प चात् चीन इस परिस्थिति में नहीं था कि वह तिब्बत पर अपना नियंत्रण रख सकता। तिब्बत ने हय दावा किया कि वह एक स्वायत प्रदेश था। भारत नि चय ही तिब्बत की स्वायता में रूचि रखता था। चीन के गृह युद्ध की अवधि में तिब्बत की स्थिति अस्पश्ट बनी रही। भारत को अक्टूबर 1950 में यह सूचना मिली कि चीन ने तिब्बत में पूरी तैयारी के साथ आक्रमण जैसी कार्यवाही आरम्भ कर दी थी। चीन की इस कार्यवाही पर भारत ने हैरानी और आ चर्य व्यक्त करते हुए औपचारिक आपति की। भारत को आ चर्य इसलिए हुआ क्योंकि चीन के प्रधानमंत्री चाऊ–एन–लाई ने स्वयं भाांतिपूर्ण उपायों का आ वासन दिया था। चीन ने भारत की आपत्ति को अस्वीकार करते हुए कहा कि भारत साम्राज्यवादी भाक्तियों के प्रभाव में आ गया था। भारत ने इस आरोप का खण्डन किया और कहा कि वह तिब्बत पर चीन के प्रभुत्व को स्वीकार करता था और वह चीन के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगा। अंत में दलाई लामा ने तिब्बत के प्र न को संयुक्त राश्ट्र में उठाने का असफल प्रयास किया। 23 मई 1951 को चीन और तिब्बत के मध्य एक समझौता हुआ। यह समझौता चीन की नीति के अनुसार हुआ । इसमें केवल तिब्बत को स्वायतता देने का प्रावधान किया गया। चीन तिब्बत के सभी प्रशसकीय और सैनिक कार्य स्वयं करेगा तथा तिब्बत में पूरी धार्मिक स्वतन्त्रता सुनि चत की जायेगी। इस प्रकार तिब्बत को पूरी तरह चीनी प्रदेश में परिवर्तित कर दिया गया। भारत सरकारी की देश और विदेशों में इस बात के लिए आलोचना की गई कि उसने तिब्बत में अपने वैधानिक अधिकारों को त्यागकर चीनी भाासकों को प्रसन्न कराने के लिए तिब्बत की स्वायतता का बलिदान कर दिया।

पंचशील समझौता :–

चीन की तिब्बत नीति से भारत प्रसन्न नहीं था, परन्तु फिर भी वह चीन के साथ अपनी मैत्री को प्रभावित नहीं होने देना चाहता था। भारत और चीन के तिब्बत क्षेत्र के मध्य वाणिज्य तथा अन्य संबंधों के विशय में भारत चीन संधि पर 29 अप्रैल 1954 को हस्ताक्षर किए गए। यह समझौता 8 वर्श के लिए किया गया और इसी समझौते में पंचशील के विद्धांतों को भी भाामिल किया गया। वाणिज्य समझौते पर हस्ताक्षर होने के बाद चीनी प्रधानमंत्री भारत यात्रा पर आए और भारतीय प्रधानमंत्री चीनी यात्रा पर गए। प्रधानमंत्री चाऊ–एन–लाई ने भारत यात्रा के समय कहा कि दोनों देशों पंचशील के आदर्शों का पालन करेंगे। पंचशील के पांच विद्धांत इस प्रकार थे :–

1. एक–दूसरे की प्रादेशिक अखण्डता और संप्रभुता के लिए पारस्परिक सम्मान की भावना पर आचरण करना,
2. अनाक्रमण,
3. एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना,
4. परस्पर समान्ताऔर मित्रता की भावना
5. भाांतिपूर्ण सह–अस्तित्व

पंचशील की घोशणा करते समय प्रधानमंत्री नेहरू ने यह आशा व्यक्त की थी कि इन सिद्धांतों के पालन से स्थायी वि व भाांति की स्थापना संभव हो सकेगी। पंचशील पर हस्ताक्षर होने के बाद कुछ समय को भारत–चीन की प्रगाढ़ मैत्री तथा हिन्दी–चीनी भाई–भाई का काल कहा जाता है।

तिब्बत में विद्रोह :–

तिब्बत के निवासियों द्वारा जो चीन के विरूद्ध विद्रोह किया गया उससे चीन ने जिस प्रकार निपटने का प्रयत्न किया उसको लेकन भारत–चीन संबंधों में कुछ तनाव उत्पन्न हुआ। तिब्बत का प्र न दोनों के संबंधों में एक समस्या बन गया। पंचशील के सिद्धांतों को दर–किनार करते हुए चीन ने फिर से वही विरोधी कार्यवाही करनी आरम्भ कर दी। विद्रोह का मुख्य कारण चीनी सेना द्वारा तिब्बत की स्वायतता का नाश करना और चीनी सेनाओं का तिब्बत में प्रवेश। चीन ने अनेक कल्याणकारी सेवाओं का हवाला दिया लेकिन तिब्बत के निवासियों को चीन का किसी भी प्रकार का निमंत्रण स्वीकर नहीं था। मार्च 1959 के मध्य तिब्बत की राजधानी ल्हासा में आकस्मिक विद्रोह आरम्भ हो गया। चीन ने विद्रोह का इतना भीशण दमन किया कि दलाई लामा को अपनी सत्ता छोड़कर गोपनीय मार्ग से भारत के लिए पलायन करना पड़ा। उनके साथ हजारों तिब्बतवासी भी भारत आ गए। भारत ने दलाई लामा को भारण दी लेकिन कहा कि वे चीन के खिलाफ आन्दोलन नहीं करेंगे। चीन ने भारत पर आरोप लगाया कि भारत ने दलाई लामा को भारण देकर भात्रुता जैसा कार्य किया है। चीन इतना क्रोधित हुआ कि वह भारत विरोधी कार्य करने लग गया और उसकी यह कार्यवाही वर्तमान में भी जारी है।

भारतीय कूटनीति में बदलाव के संकेत :–

आज के जागरण अंक में कहा गया है कि चीन भारत की संप्रभुता का सम्मान करे। चीन को लेकर भारत की कूटनीति में बदलाव के जो संकेत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 19 जनवरी मंगलवार को दिए थे। विदेश सचिव एस. जयशंकर ने भी चीन को साफ–साफ कहा है कि उसे भारत की भौगोलिक संप्रभुता का सम्मान करना पड़ेगा। ''रायसीना डायलाग 2017'' के एक सत्र को संबोधित करते हुए जयशंकर ने जिस अंदाज में चीन व भारत के रि तों को परिभाशित किया है वह भारतीय कूटनीति के लिए नया है। उन्होंने कहा है कि उन्होंने कहा कि ''भारत की प्रगति चीन के लिए कोई खतरा नहीं है। लेकिन चीन को भारी की भौगोलिक संप्रभुता का सम्मान करना होगा'' मोदी ने संकेत में चीन को कहा कि दूसरे देशों को जोड़ना की कोशिश में अन्य देशों की संवेदनाओं का सम्मान करना चाहिए। जयशंकर ने कहा कि क मीर होते हुए पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाली चीन की सड़क परियोजना का जिक्र करते हुए कहा कि चीन एक ऐसा देश है जो अपनी संप्रभुता को लेकर काफी संवेदनशील रहता है। ऐसे में उम्मीद की जानी चाहिए कि वह दूसरे देशों की संवेदनाओं का भी ख्याल रखेगा। भारत की सुरक्षा के लिए भी चलन एक चुनौती नजर आता है। क्योंकि समय–समय पर वह भारत की प्रगति में अड़गा लगाता रहता है। अभी हाल ही में वह एन.एस.जी. मैं भारत की सदस्यता के दावे का विरोध कर रहा है। जिससे दोनों देशों के संबंधों पर अव य नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

लद्दाख की समस्या :–

लद्दाख सदा से जम्मू क मीर का अंग रहा है और आज भी है। भारत और चीन लम्बें समय से लद्दाख क्षेत्र को ही सीमा रेखा मानते हैं। भारत के मानचित्र में सदैव इस सीमा रेखा को प्रदर्शित किया गया था। चीन ने 1956–57 में अक्साई चीन क्षेत्र से निकलती एक सड़क का निर्माण किया गया। चीन इस से वाणिज्य को सोवियत संघ और स्वयं अपनी ओर मोड़ना चाहता था। इस प्रकार लद्दाख का क्षेत्र विवाद का प्रमुख कारण रहा है। समय–समय पर दोनों देशों के नेताओं द्वारा आपसी सहयोग पर आधारित अनेक समझौते होते रहते हैं। 2003 में वाजपेयी की चीन यात्रा ने संबंधों में कुछ सुधार करवाया और 2005 में वेन जियाबाओं की भारत यात्रा के बाद प्रधानमी मनमोहन ने कहा कि दोनों देश वास्तविक सीमा रेखा का पूरी तरह आदर और पालन करेंगे।

निश्कर्श (Conclusion):-

भारत की सुरक्षा और कूटनीति में चीन एक महत्वपूर्ण समस्या या चुनौती है। चीन समय–समय पर भारत को नुकसान पहुंचाता रहता है। कभी आर्थिक तो कभी क्षेत्रीय क्षति। क्षेत्रीय चुनौती सबसे ज्यादा कारगर साबित होती है। क्षेत्रीय समस्याओं में सीमा विवाद मुख्य है। तिब्बत का विवाद सवालों से चला आ रहा है। तिब्बत को लेकर दोनों देशों में हमेशा भीत युद्ध चलता रहता है। चीन तिब्बत को अपना अंग मानता है। लेकिन भारत ऐसा मानने का तैयार नहीं है। 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण से भी चीन नाराज हुआ और उसने अमेरिका के साथ मिलकर यह मांग की कि भारत अपने परमाणु अस्त्रों को नश्ट कर दे लेकिन चीन स्वयं ऐसा नहीं कर रहा है। यह नीति भी भारत की सुरक्षा और कूटनीति के लिए एक बड़ी चुनौती है भारत के साथ चीन द्वारा संबंध सुधारने की प्रक्रिया को 1999 से ही गति प्राप्त हुई। भारत के परमाणु परीक्षणों पर आक्रोश का स्थान एक बहुआयामी सहयोग ने लेना आरम्भ किया। चीन के राश्ट्रपति जियान जेमिंग की सफल भारत यात्रा ने मैत्री का वातावरण तैयार किया 1988 से लेकर 2002 तक भारत–चीन संयुक्त कार्यदल की 14 बैठक भी हुई। भारत और चीन के बीच सहयोग के अन्य अनेक क्षेत्रों का विकास हो रहा था। दोनों देश अंतर्राश्ट्रीय संबंधों को बहुध्रुवी व्यवस्था के पक्षधर थे, और दोनों ने ही परमाणु निशस्त्रीकरण तथा सभी देशों से परमाणु अस्त्रों के उन्मूलन के लिए अपनी वचनबद्धता व्यक्त की है। 1962 के भारत चीन युद्ध के बाद नाथूला दर्रे को बंद कर दिया था जो तिब्बत और सिक्किम को जोड़ता था। यह व्यापार के लिए प्रयोग होता था लेकिन 2006 में पुनः इसे खोल दिया गया ताकि व्यापारिक संतुलन बना रहे। 1976 में 15 वर्शों के अंतराल के बाद भारत और चीन के बीच पुनः राजदूतों के आदान–प्रदान का निर्णय हुआ अटल बिहारी वाजपेयी चीन यात्रा पर गए। 1988 में राजीव गांधी उस के बाद 1993, 1996, 2003, 2005 ओर 2008 में दोनों देशों के नेताओं द्वारा आपसी सहयोग और सहमति के आधार पर यात्राा की गई और अनेक समझौते हुए। अभी वर्तमान में अनेक समझौते भारतीय प्रधानमंत्री और चीनी प्रधानमंत्री के द्वारा यात्राएं की गई जिससे भी उम्मीद जगी है कि भविश्य में भारत की सुरक्षा और कूटनीति के लिए चीन एक चुनौती नहीं रहेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. खन्ना वी.एन., अरोड़ा लिपाक्षी, विकास पब्लिकेशन 2008 भारत की विदेश नीति। पेज नं0 144
2. डॉ0 महेन्द्र कुमार मिश्र, कल्पना प्रकाशन 2010 अंतर्राश्ट्रीय राजनीति।
3. जे.एन. दीक्षित प्रभात प्रकाशन दिल्ली – 2013, भारतीय विदेश नीति।
4. आनंद प्रताप सिंह – google.com.2016 वै वीकरण के बाद भारत चीन संबंध।
5. ”हमारी संप्रभुता का सम्मान कर चीन” दैनिक जागरण 19 जनवरी 2017 पेज नं0 11 www.jagran.com